

DR. SUHASCHANDRA VITHAL MAPUSKAR (POSTHUMOUS)

Dr. Suhaschandra Vithal Mapuskar, a medical doctor by profession, was a self educated public health engineer and sanitation expert. Having achieved distinction even as a medical officer with the Maharashtra State Health Services, beginning work in Dehu Village near Pune, he went on to become an expert in sanitation and bioenergy, focusing on low cost appropriate sanitation technology. He developed the Malaprabha nights oil based bio gas plant as part of a Decentralized On Site Integrated Waste Management system (DOSIWAM) which includes safe and effective re-use of waste water as well as human excreta for fuel and manure.

2. Born in Mumbai on January 22, 1935, Dr. Mapuskar completed his primary schooling in a small village, Vaked near Lanja in district Ratnagiri. In spite of financial hardships, he completed his MBBS from BJ Medical College, Pune in 1959, from awarded scholarships and part time work. Having joined the Maharashtra State Health Services as a medical officer at Primary Health Centre, Dehu, he emphasized the preventive aspects of health issues, and developed this Primary health centre (PHC), into an ideal PHC, which became the focus of a film by UNICEF, titled 'To be a doctor'. He performed more than 35,000 sterilization operations and developed the 'Mapuskar's Technique' of vasectomy. For his contribution to the National Family Welfare Programme, he received medals from the state health department in the years 1969, 70 and71, and several certificates and awards for his work.

3. Having begun his sanitation career with the construction of his own trench latrine in the precincts of the PHC, comprising of a trench and medicine cartons at its walls, Dr. Mapuskar went on to secure the participation of the people of Dehu and surrounding villages in safeguarding their own health, in particular, with safe water and proper management of human excreta, which until then, was in the open. Realizing that majority of patients suffered due to poor sanitation, he worked vigorously for promotion of sanitation and as a corollary, for non conventional energy sources at a period, when sanitation promotion was on the agenda of Gandhian thinkers and workers only.

4. Dr. Mapuskar retired from government service prematurely to work for rural sanitation, non-conventional energy sources and health promotion; issues close to his heart. In 1980, he founded 'Jyotsna Arogya Prabodhan' for health education, health promotion and environmental sanitation work. In 1985, he founded 'Swasthya Udyog' for sanitation service provision and sanitation material availability. Inspired by a Gandhian thinker, Shri Appasaheb Patwardhan, in 1988, 'Appa Patwardhan Safai W Paryawaran Tantraniketan' was established, for training, R & D, consultancy and implementation including non conventional energy sources such as biogas technology.

5. Awareness generation, development of appropriate low cost sanitation technologies, personal and domestic hygiene were some issues that Dr. Mapuskar prioritized. Besides health education, he designed and provided hardware such as different types of latrine pans and traps, biogas burners etc. He designed and constructed about 75 biogas plants in Dehu all of which function satisfactorily to this day. He was one of the pioneers for human nightsoil based biogas plants, and is credited with the development of the Malaprabha biogas plant, a part of Decentralized On Site Integrated Waste Management System (DOSIWAM) for management of grey water and human nightsoil, which is suitable for urban and rural use, even in constraints of space. This system has been operational in several states in India, such as Tamil Nadu, Gujarat, Andhra Pradesh, Madhya Pradesh and Maharashtra. He worked on innovative strategies for using the available sanitation technologies in an appropriate manner. He designed appropriate latrine pans and water seal traps for low cost toilets for efficient functioning. He evolved, designed and constructed pay & use toilet complexes where human nightsoil is used for generating biogas. By reducing open air defecation, managing waste disposal hygienically and generating biogas for domestic use, Dr Mapuskar's work directly improved the quality of life of rural population.

6. Dr. Mapuskar edited and published 'Journal of Biowaste Treatment' and authored books on biogas plant technology and solid and liquid waste management in Marathi and English, besides contributing to various government training manuals and popular magazines. Notable among the several awards he received were medals for his contribution to the National Family Welfare Programme from the state health services in 1969, 70, and 71, the State's Swachhata Doot award in 2005 and the Nirmal Graam Puraskaar for his NGO in 2006.

7. He passed away on October 21, 2015.



डॉ. सुहासचन्द्र विट्ठल मापुस्कर (मरणोपरांत)

डॉ. सुहासचन्द्र विट्ठल मापुस्कर पेशे से एक चिकित्सक थे एवं स्व प्रशिक्षित जन स्वास्थ्य अभियंता और स्वच्छता विशेषज्ञ थे। महाराष्ट्र राज्य स्वास्थ्य सेवा में एक यशस्वी चिकित्सा अधिकारी के रूप में आपने प्रतिष्ठा अर्जित की। आपने पुणे के निकट देहु गांव से कार्य शुरू करने के बाद कम लागत की उचित स्वच्छता तकनीकी पर ध्यान देते हुए स्वच्छता एवं जैव उर्जा के क्षेत्र में एक विशेषज्ञ के रूप में ख्याति प्राप्त की। आपने डिसेंट्रलाइज्ड ऑन साइट इंटिग्रेटेड वेस्ट मैनेजमेंट सिस्टम (डीओएसआईडब्ल्यूएएम), के भाग के रूप में मल आधारित मलप्रभा जैविक गैस प्लांट का विकास किया। जिसमें इंधन एवं जैविक स्वाद के लिए स्वच्छ एवं मलजल का प्रभावी पुनर्उपयोग तथा मानव मल का उपयोग किया जाता है।

2. आपका जन्म 22 जनवरी, 1935 को मुबंई में हुआ। आपने रत्नागिरि जिले में लंजा के निकट वाकेड़ नामक एक छोटे से गांव में शिक्षा प्राप्त की। आर्थिक कठिनाइयों के बावजूद आपने प्राप्त स्कॉलरशिप की सहायता से एवं पार्ट टाइम काम करके बी जे मेडिकल कॉलेज, पुणे से वर्ष 1959 में एम बी बी एस की डिग्री प्राप्त की। आपने महाराष्ट्र राज्य स्वास्थ्य सेवा में प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र में चिकित्सा अधिकारी का पदभार संभालने के बाद स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों के निवारक पहलुओं पर बल दिया और इस प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र को आदर्श प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र (पीएचसी) बना दिया, जो यूनिसेफ (यूएनआईसीईएफ) द्वारा 'दु बी ए डॉक्टर' नाम से बनाई गई फिल्म का मुख्य विषय था। आपने 35,000 से अधिक वंध्याकरण ऑपरेशन किए और नसबंदी के लिए 'मपुस्कर तकनीकी' का विकास किया। राष्ट्रीय परिवार कल्याण कार्यक्रम को आपके इस योगदान के कारण आपको राज्य स्वास्थ्य विभाग द्वारा वर्ष 1969, 70, एवं 71 में पदकों से नवाजा गया तथा आपको इस प्रशंसनीय कार्य के लिए अन्य कई प्रमाण-पत्रों और पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।

3. आपने प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र के अहाते में ही खंदक खोदकर और दवाओं के कार्टूनों की इसके चारों ओर दीवार बनाकर शौच घर बनाकर स्वच्छता अभियान की शुरूआत की और देहु तथा निकट के गांवों के लोगों को अपने स्वास्थ्य सुरक्षा, विशेषत: स्वच्छ जल एवं मानव-मल के उचित प्रबंधन के द्वारा, इस अभियान में सहभागी बनाया। इससे पहले इस क्षेत्र में लोग खुले में शौच करते थे। आपने महसूस किया कि अधिकतर रोगी गंदगी के कारण रोगग्रस्त होते हैं। आपने स्वच्छता के संवर्धन और इसके उपसाध्य के रूप में गैर-पारंपरिक उर्जा स्रोतों के लिए उस समय पुरजोर अभियान चलाया जब स्वच्छता संवर्धन का विषय गांधीवादी विचारकों एवं कार्यकर्ताओं का एजेंडा होता था।

4. आप अपनी रूचि के विषय ग्रामीण स्वच्छता गैर-पारंपरिक ऊर्जा श्रोतों एवं स्वास्थ्य संवर्धन के लिए कार्य करने हेतु, सेवा से समय पूर्व सेवानिवृत्ति ले ली। वर्ष 1980 में आपने स्वास्थ्य शिक्षा, स्वास्थ्य संवर्धन एवं पर्यावरणीय स्वच्छता कार्य के लिए "ज्योत्सना आरोग्य प्रबोधन" की स्थापना की। वर्ष 1985 में आपने स्वच्छता सेवा हेतु प्रावधान करने तथा स्वच्छता सामग्रियों की उपलब्धता के लिए "स्वास्थ्य उद्योग" की स्थापना की। गांधीवादी विचारक श्री अप्पासाहिब पटवर्धन से प्रभावित होकर वर्ष 1988 में आपने "अप्पा पटवर्धन सफाई व पर्यावरण तंत्र निकेतन" की स्थापना की जिसका उद्देश्य अनुसंधान एवं विकास कंसलटेंसी, प्रशिक्षण तथा बायोगैस तकनीकी जैसे गैर पारंपरिक ऊर्जा स्रोतों सहित ऊर्जा स्रोतों के लिए क्रियान्वयन कार्य करना था।

5. आपने जागरूकता निर्माण, कम लागत की उपयुक्त स्वच्छता तकनीकी के विकास, वैयक्तिक एवं घरेलू स्वच्छता आदि विषयों को प्राथमिकता दी। स्वास्थ्य शिक्षा के अतिरिक्त आपने विभिन्न प्रकार के लैटरिन पैन्स एवं ट्रैप्स, बायोगेस बर्नर आदि जैसे हार्डवेयर के डिजायन किये एवं उन्हें उपलब्ध कराया। आपने देहू में 75 बायोगैस संयंत्रों का डिजायन किया एवं निर्माण किया जिसमें से सभी के सभी आज भी संतोषप्रद से कार्य कर रहे हैं। मानव मल आधारित बायोगेस संयंत्र बनाने के क्षेत्र में आप अग्रणी व्यक्तियों में से रहे एवं आपको डिसेंट्रलाईज ऑन साइट इंटीग्रेटिट वेस्ट मेनेजमेंट सिस्टम (डीओएसआईडब्ल्यूएएम) के भाग के रूप में मलप्रभा बायोगैस संयंत्र बनाने का यश प्राप्त है जिसमें मल जल एवं मानव मल का प्रबंधन किया जाता है तथा जो ग्रामीण एवं शहरी दोनों क्षेत्रों के लिए सर्वथा उपयुक्त है एवं स्थान की कमी जैसी स्थिति के लिए भी अनुकूल है। यह प्रणाली भारत के कई राज्यों यथा – तमिलनाडु, गुजरात, आंध्र प्रदेश, मध्य प्रदेश एवं महाराष्ट्र राज्यों में कार्यरत हैं। आपने उपलब्ध स्वच्छता तकनीकी को अत्यंत उचित पद्धति से उपयोग करने हेतु अभिनव रणनीतियों पर कार्य किया। आपने अनुकूल लैटरिन पैन्स एवं वॉटर सील ट्रैप्स का डिजायन किया जो कम लागत के शौचालयों के लिए अत्यंत अनुकूल सिद्ध हुआ। आपने ऐसे भुगतान एवं उपयोग शौचलयों परिसरों के डिजायन बनाए एवं निर्मित किये जंहा बायोगैस के उत्पादन हेतु मानव मल का उपयोग किया जाता है। खुले में शौच पर रोकथाम, मल प्रबंधन एवं स्वच्छता पूर्वक निष्पादन तथा घरेलू उपयोग के लिए बायोगैस के उत्पादन जैस कार्यों से आपने ग्रामीण आबादी के जीवन स्तर को सुधारने में प्रत्यक्ष रूप से अपनी महती भूमिका निभाई।

6. आपने "जनरल ऑफ बायोवेस्ट ट्रीटमेंट" का संपादन एवं प्रकाशन किया तथा मराठी एवं अंग्रजी भाषा में बायोगैस संयंत्र तकनीकी एवं ठोस एवं द्रव मल प्रबंधन पर पुस्तकें लिखीं। इसके साथ ही आपने विभिन्न सरकारी प्रशिक्षण मैनुअलों एवं लोकप्रिय पत्रों में आलेख भी लिखे। राष्ट्रीय परिवार कल्याण कार्यक्रम के लिए योगदान हेतु आपको विभिन्न पुरस्कारों एवं पदकों से सम्मानित किया गया जिनमें राज्य स्वास्थ्य सेवा द्वारा वर्ष 1969, 70 एवं 71 में पदक, वर्ष 2005 में राज्य स्वच्छता दूत पुरस्कार तथा वर्ष 2006 में आपके एनजीओ के लिए निर्मल ग्राम पुरस्कार प्रमुख रूप से उल्लेखनीय हैं।

7. अक्टूबर 21, 2015 को आपका देहावसान हो